International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(II), January- March, 2025, pp. 169-172

मौलाना अबुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचारों का अध्ययन

डॉ. बिंदु कुमारी*
बुशरा**

सार

भारतीय विचारकों ने विकसित भारत की एक संकल्पना प्रस्तुत की है। इसमें से एक है, मौलाना अबुल कलाम आजाद। मौलाना अबुल कलाम आजाद ने जिस प्रकार के शैक्षिक विचार प्रस्तुत किए है वह आज भी प्रासंगिक और भारतीय संस्कृति के अनुरूप है, प्रस्तुत शोध पत्र में अबुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचारों और उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है और यह पाया गया है कि शिक्षा के बारे में उनके विचार, जो समावेशिता, सांस्कृतिक संरक्षण और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने में गहराई से निहित हैं, आधुनिक युग में प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत बने हुए हैं।

शब्दकोशः *कलाम, विकास, शिक्षा, विचार, सांस्कृतिक संरक्षण।*

प्रस्तावना

शिक्षा की दुनिया ऐतिहासिक रूप से व्यक्तियों के पोषण और समाज को आकार देने का एक सर्वोपरि क्षेत्र रही है। इस संदर्भ में, एक महान बुद्धिजीवी और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक प्रमुख व्यक्ति, अबुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचारों ने शैक्षिक विमर्श और नीति के पाठ्यक्रम पर एक अमिट छाप छोड़ी है। आजाद का जीवन और कार्य बौद्धिक जिज्ञासा, सामाजिक सुधार और राष्ट्र निर्माण की भावना को दर्शाता है। शिक्षा के बारे में उनके विचार, जो समावेशिता, सांस्कृतिक संरक्षण और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने में गहराई से निहित हैं, आधुनिक युग में प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत बने हुए हैं। अबुल कलाम आजाद, जिन्हें प्यार से मौलाना आजाद के नाम से जाना जाता था, एक बहुश्रुत थे जिनकी विरासत उनके समय से बहुत आगे तक फैली हुई है। स्वतंत्र भारत में पहले शिक्षा मंत्री के रूप में, उन्होंने देश के शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आजाद ने शिक्षा को सशक्तिकरण के साधन के रूप में देखा, विविधता में एकता की भावना को बढ़ावा दिया और व्यक्तियों को तेजी से बदलती दुनिया में नेविगेट करने के लिए उपकरणों से लैस किया। बहुलवाद, सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण के प्रति गहरी प्रतिबद्धता से समृद्ध उनका दर्शन, शिक्षा के क्षेत्र में समकालीन चुनौतियों के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। यह अध्ययन मूल रूप से सैद्धांतिक है और गुणात्मक शोध दृष्टिकोण को अपनाता है।

शोध उद्देश्य

अबुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।

---

* निर्देशिका, शिक्षा विभाग, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।
** शोधार्थी, शिक्षा विभाग, मौलाना आजाद विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

शोध पद्धति एवं तथ्य संकलन

इस शोध के लिए तथ्यों के प्राथमिक स्रोतों में मुख्य रूप से अबुल कलाम आजाद के लेखन और विभिन्न कार्य शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों, डायरियों और विशेषज्ञों और विद्वानों द्वारा लिखे गए लेखों जैसे विभिन्न संसाधनों से पूरक जानकारी एकत्र की गई है, जिन्होंने आजाद के जीवन और कार्यों का पता लगाया है।

अबुल कलाम का शैक्षिक दर्शन

दूरदर्शी विद्वान और स्वतंत्रता सेनानी अबुल कलाम आजाद ने शिक्षा को एक गहन और बहुमुखी प्रयास माना। उनका मानना था कि शिक्षा का अर्थ केवल ज्ञान और कौशल हासिल करने से कहीं आगे तक फैला हुआ है। आजाद के अनुसार, शिक्षा में व्यक्ति की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक क्षमताओं का समग्र विकास शामिल है शिक्षा के बारे में आजाद की अवधारणा सहिष्णुता, करुणा और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों को बढ़ावा देने में गहराई से निहित थी। उन्होंने शिक्षा को विविधतापूर्ण समाज में एकता को बढ़ावा देने के साधन के रूप में देखा, एक समावेशी और न्यायसंगत शैक्षिक प्रणाली की वकालत की जो सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक विभाजन को पार करती हो। इसके अलावा, उन्होंने शिक्षा के माध्यम से एक राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और मनाने के महत्व पर जोर दिया, उनका मानना था कि एक मजबूत सांस्कृतिक आधार एक राष्ट्र की प्रगति और पहचान के लिए आवश्यक है।

संक्षेप में, शिक्षा के बारे में अबुल कलाम आजाद का दृष्टिकोण ऐसे व्यक्तियों को पोषित करने की भूमिका से चिह्नित था जो न केवल ज्ञानवान थे बल्कि नैतिक, सांस्कृतिक रूप से जागरूक और सामाजिक रूप से जिम्मेदार भी थे, जो समग्र रूप से व्यक्ति और समाज दोनों की बेहतरी में योगदान करते थे। मौलाना आजाद शिक्षा के चश्मे से पूर्व और पश्चिम के बीच की खाई को पाटना चाहते थे। निस्संदेह, उनकी विचारधारा भौतिकवाद और आध्यात्मिकता के बीच ऐतिहासिक विरोध को समेटने की क्षमता रखती है जो मानव दुनिया में कायम है। यह अस्तित्व के उच्च क्षेत्रों की ओर मानवता की प्रगति के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में भी काम कर सकता है।

मौलाना आजाद ने एक देशभक्त, एक नेता, एक दार्शनिक–राजनेता और एक प्रतिष्ठित विद्वान की भूमिका निभाई। उनकी गहन विद्वता और 'प्रतिभाशाली बुद्धि' ने उन्हें भारत में ग्यारह शताब्दी के इतिहास में जमा हुए पूर्वाग्रह और कट्टरता के बादलों को दूर करके इस्लाम में महत्वपूर्ण योगदान देने में सक्षम बनाया। वे अतीत की बौद्धिक विरासत के एक योग्य उत्तराधिकारी थे, उनकी बौद्धिक यात्रा इस्लामी विचारों के पूरे स्पेक्ट्रम को दर्शाती है। भारतीय दर्शन की आजाद की गहरी समझ, साथ ही विभिन्न विश्व धर्मों के बारे में उनकी अंतदृ ष्टि ने उन्हें अनावश्यक से प्रामाणिक और आवश्यक तत्वों को समझने की अनुमति दी।

अबुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

- **समावेशिता और समानता:** शिक्षा को लोकतांत्रिक बनाने और समान अवसर प्रदान करने पर आजाद का जोर समावेशी शिक्षा के लिए वैश्विक आह्वान के अनुरूप है। ऐसे युग में जहाँ शैक्षिक असमानताएँ बनी हुई हैं, आजाद का सभी के लिए सुलभ शिक्षा का दृष्टिकोण अत्यधिक प्रासंगिक बना हुआ है।
- **सांस्कृतिक संरक्षण:** सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करने और उसका जश्न मनाने के लिए आजाद की प्रतिबद्धता आज की वैश्वीकृत दुनिया में महत्वपूर्ण है। जैसे–जैसे समाज सांस्कृतिक आत्मसात की चुनौतियों से जूझ रहा है, शिक्षा के माध्यम से सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने के उनके विचार मूल्यवान हैं।
- **आलोचनात्मक सोच:** आलोचनात्मक सोच और स्वतंत्र निर्णय के लिए आजाद की वकालत आधुनिक शैक्षणिक सिद्धांतों से मेल खाती है जो समस्या–समाधान, रचनात्मकता और विश्लेषणात्मक सोच सहित 21वीं सदी के कौशल के विकास को प्राथमिकता देते हैं।

- **नैतिक और नैतिक शिक्षाः** छात्रों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक जिम्मेदारी और करुणा को स्थापित करने की आवश्यकता आधुनिक युग में तेजी से पहचानी जा रही है। इन गुणों को विकसित करने पर आजाद का ध्यान जिम्मेदार और सहानुभूतिपूर्ण नागरिक बनाने के समकालीन प्रयासों के अनुरूप है।
- **लैंगिक समानताः** महिलाओं की शिक्षा के लिए आजाद का मजबूत समर्थन शिक्षा में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के चल रहे प्रयासों के साथ प्रतिध्वनित होता है। शिक्षा के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण एक वैश्विक प्राथमिकता बनी हुई है।
- **भाषा और सांस्कृतिक शिक्षाः** जैसे–जैसे दुनिया अधिक परस्पर जुड़ती जा रही है, आजाद का भाषा और सांस्कृतिक संरक्षण पर जोर प्रासंगिक है। भाषाओं और विरासत को संरक्षित करने के संदर्भ में, आजाद के विचार मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।
- **वैश्विक संपर्कः** क्षेत्रीय भाषाओं को वैश्विक ज्ञान से जोड़ने की आवश्यकता के बारे में आजाद की मान्यता डिजिटल युग में विशेष रूप से प्रासंगिक है, जहाँ भाषाई और सांस्कृतिक सीमाओं के पार सूचना और विचारों का प्रसार आम बात है।
- **शिक्षक की भूमिकाः** शिक्षकों को नैतिक मार्गदर्शक, आलोचनात्मक सोच विकसित करने वाले और राष्ट्रीय एकता के प्रवर्तक के रूप में देखने का आजाद का नजरिया शिक्षक की गुणवत्ता और छात्रों के चरित्र और बुद्धि को आकार देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर समकालीन चर्चाओं से मेल खाता है।
- **क्षेत्रीय भाषाओं में परिवर्तनः** जैसा कि शिक्षण के माध्यम पर बहस जारी है, शिक्षा में अंग्रेजी से क्षेत्रीय भाषाओं में क्रमिक बदलाव का आजाद का विचार आधुनिक शिक्षा प्रणालियों में भाषा विकल्पों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों और अवसरों को दर्शाता है।
- **शिक्षा के माध्यम से सशक्तिकरणः** आजाद का यह विश्वास कि महिलाओं की शिक्षा में सामाजिक मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को संबोधित करने की क्षमता है, प्रासंगिक बना हुआ है। प्रगति के उत्प्रेरक के रूप में महिलाओं की शिक्षा पर वैश्विक ध्यान उनके विचारों की कालातीत प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

निष्कर्ष

अबुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचार विकसित भारत का निर्माण करने और समावेशी, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रणालियों को आकार देने के लिए एक मूल्यवान रूपरेखा प्रदान करते हैं। उनके विचार दुनिया भर के शिक्षकों, नीति निर्माताओं और विद्वानों के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में काम करते रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आलम, सैयद. समशुल. (2012). मौलाना अबुल कलाम आजादः आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली के वास्तुकार, आलिया विश्वविद्यालय, कोलकाता
2. बेगम, टी., और चक्रवर्ती, टी. (2013). भारत में राष्ट्रीय शिक्षा के पुनर्निर्माण और समावेश में मौलाना अबुल कलाम आजाद की भूमिका
3. चिरालादिनी, आर. (2023). मौलाना अबुल कलाम आजाद का शैक्षिक योगदान और वर्तमान परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता
4. इंजीनियर, असगर अली. (1988). मौलाना आजाद और स्वतंत्रता संग्राम. आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 23 (50), 2633–2635

5. हबीब, एस. आई. (2015). मौलाना अबुल कलाम आजाद और राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के बारे में उनके विचार. समकालीन शिक्षा संवाद, 12(2), 238–257

6. हिजाम, ए.एच., और सोफाल, एफ.ए. (2021) एनईपी–2020और मौलाना अबुल कलाम आजाद के शैक्षिक आदर्शः स्थान और प्रासंगिकता, जर्नल ऑफ रिसर्च एंड इनोवेशन इन एजुकेशन, 7(1), 78–96

7. पीरजादा, एन. (2022)। मौलाना अबुल कलाम आजाद के शैक्षिक विचार और भारत की आधुनिक शिक्षा प्रणाली में उनका योगदान, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड मल्टीडिसिप्लिनरी साइंटिफिक रिसर्च (आईजेएएमएसआर), 5 (3), 1–8

8. पीरजादा, एन.ए.जे.एम.ए.एच. मौलाना अबुल कलाम आजाद एक महान शैक्षिक अग्रदूत। जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, एनसीईआरटी, 168–167.

❖◆❖